१. इतिहास के साधन

पिछले वर्ष हमने भारत के प्राचीन कालखंड का अध्ययन किया है। इस वर्ष हम मध्यकालीन कालखंड का अध्ययन करेंगे । भारतीय इतिहास में मध्यकाल मोटे तौर पर ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के अंत तक माना जाता है। इस पाठ में हम मध्यकालीन इतिहास के साधनों का अध्ययन करेंगे ।

भूतकाल में घटित घटनाओं के कालक्रम के अनुसार प्रामाणिक और वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर दी गई जानकारी को इतिहास कहते हैं।

क्या तुम जानते हो ?

इतिहास शब्द 'इति+ह+आस्' द्वारा निर्मित है। इस शब्द का अर्थ 'ऐसा हुआ' है।

इतिहास की दृष्टि से व्यक्ति, समाज, स्थान और काल ये चार घटक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इतिहास को विश्वसनीय प्रमाणों पर आधारित होना आवश्यक है। इन प्रमाणों को ही इतिहास के साधन कहते हैं।

हम इन साधनों का वर्गीकरण भौतिक साधन, लिखित साधन और मौखिक साधन में करेंगे । उनकी जानकारी प्राप्त करेंगे तथा इतिहास के इन साधनों का मूल्यांकन भी करेंगे ।

जिस ऐतिहासिक घटना का अध्ययन करना है; उससे संबंधित अनेक घटकों का विचार करना पड़ता है। इसके लिए ऐतिहासिक साधनों का आधार लेना पड़ता है। इन साधनों की जाँच-पड़ताल करना आवश्यक होता है। उनकी प्रामाणिकता और सत्यता की पड़ताल करनी पड़ती है। इन साधनों का उपयोग अत्यंत सूझ-बूझ और विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा करना आवश्यक होता है।

भौतिक साधन

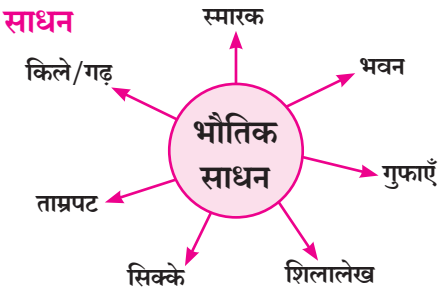

उपरोक्त वस्तुओं और भवनों अथवा उनके अवशेषों को इतिहास के 'भौतिक साधन' कहते हैं।

भौतिक साधनों में किलों अथवा गढ़ों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। किलों अथवा गढ़ों के कुछ महत्त्वपूर्ण भेद हैं जैसे- गिरिदुर्ग, वनदुर्ग, जलदुर्ग और जमीनी किला। इसी तरह स्मारकों में समाधि, मकबरा, उकेरे हुए छोटे शिलालेख (वीरगल) तथा भवनों में-रजवाड़ा, मंत्रिनिवास, रनिवास, सामान्य लोगों के मकान आदि का समावेश होता है। इनके आधार पर हमें उस कालखंड का बोध होता है। वास्तुकला में हुई उन्नति से परिचय प्राप्त होता है। उस कालखंड की आर्थिक स्थिति, कला की ऊँचाई, निर्माणकार्य शैली और लोगों के जीवन स्तर आदि की जानकारी मिलती है।

बताओ तो

सिक्कों द्वारा इतिहास की जानकारी किस प्रकार प्राप्त होती है।

समझें

प्राचीन समय से कौड़ी, दमड़ी, धेला, पाई पैसा, आना, रुपया जैसे सिक्के प्रचलन में थे। सिक्कों के कारण कुछ कहावतें/लोकोक्तियाँ प्रचलित हुई हैं। जैसे-

* फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा।
* चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
* पाई-पाई का हिसाब रखना।
* सोलह आना सच।

उकेरे हुए छोटे शिलालेख (वीरगल)

इतिहास के साधन के रूप में विभिन्न शासकों द्‌वारा सोना, चांदी, तांबा जैसी धातुओं का उपयोग कर ढाले गए सिक्के महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। सिक्कों के आधार पर वे शासक कौन थे, उनका कार्यकाल, उनकी शासन व्यवस्था, धार्मिक अवधारणाएँ, व्यक्तिगत विवरण आदि की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही, आर्थिक गतिविधियों और आर्थिक स्थितियों की जानकारी मिलती है। उस कालखंड के धातुविज्ञान में हुई प्रगति ध्यान में आती है। सम्राट अकबर के सिक्कों पर अंकित राम-सीता का चित्र अथवा हैदरअली के सिक्कों पर अंकित शिव-पार्वती की प्रतिमा के आधार पर उस कालखंड में प्रचलित धार्मिक समन्वय का बोध होता है। पेशवाओं के सिक्कों पर अरबी अथवा फारसी भाषा का उपयोग किया जाता था। इससे उस कालखंड में चलने वाले भाषा व्यवहार का ज्ञान होता है।

पेशवाकालीन सिक्के

हैदरअली के सिक्के

पत्थर अथवा दीवार पर उकेरे गए लेखों को शिलालेख कहते हैं। जैसे- तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर के परिसर में उकेरे गए लेख, चालुक्य, राष्ट्रकूट, चोल और यादव शासकों के कार्यकाल में उकेरे गए अनेक शिलालेख प्राप्त हुए हैं। शिलालेख इतिहास लेखन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय प्रमाण माना जाता है। इसके द्‌वारा भाषा, लिपि, समाज जीवन जैसे घटकों को समझने में सहायता प्राप्त होती है। तांबे के पत्तर पर उकेरे गए लेखों को 'ताम्रपट' कहते हैं। इन ताम्रपटों पर राजाओं के आदेश, निर्णय आदि जानकारी उकेरी हुई होती है।

क्या तुम जानते हो ?

चैत्य, विहार, मंदिर, गिरजाघर, मस्जिदें, अगियारी, दरगाहें, मकबरे, गुरुद्‌वारा, छतरी, शिल्प, विभिन्न कोणोंवाले पक्के, गहरे और बड़े कुएँ, मीनारें, ग्रामसीमाएँ, शस्त्र, बरतन, आभूषण, वस्त्र, हस्तकला की कलात्मक वस्तुएँ, खिलौने, औजार, वाद्‌य आदि भौतिक साधन हैं।

लिखित साधन : उस कालखंड की देवनागरी, अरबी, फारसी, सर्राफा (घसीटा) आदि लिपियों की बनावट तथा शैली, विभिन्न भाषाओं के रूप, भोजपत्रों, पोथियों, ग्रंथों, आदेशपत्रों, चरित्रों, चित्रों द्‌वारा हमें मध्यकाल की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही विविध व्यंजन, लोकजीवन, वेशभूषा, आचार-विचार, तीज-त्योहार की भी जानकारी मिलती है।

इस पूरी सामग्री को इतिहास के 'लिखित साधन' कहते हैं।

लिखित साधन

- राजदरबार के कामकाज से संबंधित दस्तावेज
- वंशावली, शकावली
- पत्र व्यवहार, खलीता (खरीता)
- न्यायालय के निर्णय, आदेशपत्र
- ग्रंथ, चरित्र
- विदेशी यात्रियों के यात्रावर्णन
- बखर (इतिहास) तवारीख

इस कालखंड में विदेशी यात्री भारत में आए। उन्होंने अपना-अपना यात्रा साहित्य लिख रखा है । उसमें अल् बैरूनी, इब्न-ए बतूता, निकोलस मनुची का समावेश होता है। बाबर का चरित्र, कवि परमानंद द्वारा संस्कृत भाषा में लिखित शिवचरित्र- 'श्रीशिवभारत' तथा विभिन्न शासकों के चरित्र एवं पत्रव्यवहार के आधार पर हम उन शासकों की नीतियों, प्रशासकीय प्रबंधन तथा राजनीतिक संबंधों को समझ सकते हैं।

तवारीख अथवा तारीख का अर्थ घटनाक्रम अथवा इतिहास होता है। अल् बैरूनी, जियाउद्दीन बरनी, मौलाना अहमद, याह्या-बिन-अहमद, मिर्जा हैदर, भीमसेन सक्सेना आदि द्वारा लिखी गई तवारीखें उपलब्ध हैं।

बखर शब्द खबर शब्द से बना है। खबर का अर्थ समाचार है । महाराष्ट्र में 'बखर' इतिहास लेखन का एक प्रकार है । बखर द्वारा तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं, भाषा व्यवहार, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक स्थितियों जैसे घटकों को समझने में सहायता प्राप्त होती है । मराठी में अनेक 'बखरें' घटनाएँ घटित हो जाने के कई वर्षों के बाद लिखी गई हैं । फलतः उनमें कई बार सुनी-सुनाई जानकारी पर बल दिया गया पाया जाता है। महिकावती की बखर, सभासद की बखर, एक्याण्णव कलमी बखर चिटणीस की बखर, भाऊसाहेब की बखर, खर्डा युद्ध की बखर आदि कुछ बखरें हैं। समकालीन पश्चिमी इतिहासकार रॉबर्ट आर्म, एम. सी. स्प्रेंगल और ग्रांट डफ द्वारा लिखित ग्रंथ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

करके देखो

- पोवाडा, आदिवासी गीतों का संग्रह बनाओ।
- विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनको प्रस्तुत करो।

मौखिक साधन : लोकपरंपरा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संक्रमित होती रहीं ओवियाँ (चक्की के गीत), लोकगीत, पोवाडे, कहानियाँ, दंतकथाएँ, मिथकीय गाथाएँ आदि द्वारा हम लोकजीवन के विविध पहलुओं को समझ सकते हैं। इन साधनों को इतिहास के 'मौखिक साधन' कहते हैं ।

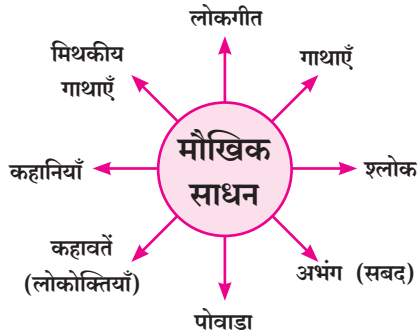

उपरोक्त तीनों प्रकारों के साधनों के आधार पर इतिहास लिखा जाता है। यद्यपि इतिहास एक बार लिखा जाए; फिर भी उस विषय से संबंधित अनुसंधान अथवा शोधकार्य निरंतर चलता रहता है। इस अनुसंधान अथवा शोधकार्य द्वारा नए साधन, नई जानकारी प्रकाश में आती है। उसके आधार पर इतिहास का पुनर्लेखन करना पड़ता है। जैसे- हमारे दादा जी-दादी जी के समय की, माता-

क्या तुम जानते हो ?

तानाजी का पोवाड़ा : इस पोवाडे के रचयिता तुलशीदास शाहीर (शौर्यकाव्य रचनाकार) हैं। इस पोवाडा में सिंहगढ़ अभियान का वर्णन मिलता है। इस पोवाडा में तानाजी, शेलार मामा, शिवाजी महाराज, वीरमाता जिजाबाई के सुंदर स्वभाव का चित्रण पाया जाता है ।

इस पोवाडे का कुछ अंश यहाँ दिया गया है ।

मामा बोलाया तो लागला । ऐंशी वर्षीचा म्हातारा ।।
"लगिन राहिले रायबाचे तो मजला सांगावी ।।
माझ्या तानाजी सुभेदारा । जे गेले सिंहगडाला ।।
त्याचे पाठिरे पाहिले । नाही पुढारे पाहिले ।।
ज्याने आंबारे खाईला । बाठा बुजरा लाविला ।।
त्याचे झाड होउनि आंबे बांधले ।
किल्ला हाती नाही आला ।।
सिंहगड किल्ल्याची वार्ता ।
काढू नको तानाजी सुभेदारा ।।
जे गेले सिंहगडाला । ते मरूनशानी गेले ।।
तुमचा सपाटा होईल । असे बोलू नको रे मामा ।।
आम्ही सूरमर्द क्षत्री । नाही भिणार मरणाला ।।"

पिता के समय की और हमारे समय की इतिहास की पुस्तकों में थोड़ा-बहुत अंतर पाया जाता है।

बोलना चाहिए

ऐतिहासिक साधनों का संवर्धन करने के उपाय सुझाओ।

ऐतिहासिक साधनों का मूल्यांकन : इन सभी साधनों को उपयोग में लाने से पूर्व कुछ सावधानी बरतना आवश्यक होता है। उन साधनों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता की पड़ताल करनी पड़ती है। उनमें मौलिक साधन कौन-से हैं; और जाली कौन-से हैं, उसकी खोज करनी पड़ती है । अंतर्गत प्रमाणों की पड़ताल कर उन साधनों की श्रेणी निश्चित की जाती है। लेखकों का सच-झूठ, उनके व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण संबंध, कालखंड, राजनीतिक दबाव आदि का भी अध्ययन करना आवश्यक होता है। दी गई जानकारी सुनी-सुनाई है अथवा उन्होंने स्वयं देखी है; इसका भी महत्त्व होता है। लेखन में प्रयुक्त अतिशयोक्तियाँ, प्रतिमाएँ, प्रतीक, अलंकार आदि का भी विचार करना पड़ता है। अन्य समकालीन साधनों के साथ उस जानकारी की पड़ताल करनी पड़ती है। प्राप्त जानकारी एकांगी, विसंगतिपूर्ण और अतिशयोक्तिपूर्ण होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। अतः उनका उपयोग सूझ-बूझ के साथ किया जाना चाहिए। इन साधनों का उपयोग सदैव विश्लेषण के पश्चात करने की सावधानी बरतनी चाहिए। इतिहास का लेखन करते समय लेखक की निष्पक्षता और तटस्थता को असाधारण महत्त्व रहता है ।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित चौखटों में छिपे ऐतिहासिक साधनों के नाम ढूँढ़कर लिखो :

त	ता	दं	त	क	था
वा	क	म्र	अ	त्र	पो
री	ग	श्लो	प	वा	लो
ख	त	श	डा	ट	क
च	दे	ख	री	ता	गी
आ	शि	ला	ले	ख	त

२. लेखन करो :

(१) स्मारकों में किन बातों का समावेश होता है?

(२) तवारीख किसे कहते हैं?

(३) इतिहास के लेखन कार्य में लेखक के कौन-से गुण महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं?

३. समूह में से अलग शब्द ढूँढ़कर लिखो :

(१) भौतिक साधन, लिखित साधन, अलिखित साधन, मौखिक साधन

(२) स्मारक, सिक्के, गुफाएँ, कहानियाँ

(३) भोजपत्र, मंदिर, ग्रंथ, चित्र

(४) ओवियाँ (सबद), तवारीखें, कहानियाँ, मिथकीय कहानियाँ

४. अवधारणाएँ स्पष्ट करो :

(१) भौतिक साधन

(२) लिखित साधन

(३) मौखिक साधन

५. क्या ऐतिहासिक साधनों का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है ? अपने विचार लिखो ।

६. तुम अपने विचार लिखो :

(१) शिलालेख को इतिहास लेखन का विश्वसनीय प्रमाण माना जाता है ।

(२) मौखिक साधनों द्वारा लोकजीवन के विभिन्न पहलू ध्यान में आते हैं ।

उपक्रम

निकटस्थ किसी वस्तुसंग्रहालय में जाओ । जिस कालखंड के इतिहास का तुम अध्ययन कर रहे हो; उस काल के इतिहास के साधनों की जानकारी प्राप्त करो और उपक्रम कॉपी में लिखो ।

72RSJZ